

जल संसाधन बचायें - उज्ज्वल भविष्य के लिये

जैसे-जैसे मानव विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है जल की आवश्यकतायें व उपयोग भी बढ़ता जा रहा है। लोगों की खुशहाली और पर्यावरण के भरण पोषण के लिये पानी की बुनियादी जरूरतों को आगे बढ़कर देखें तो पानी के अभाव का सवाल बहुत हद तक आर्थिक सवाल है। पानी का दोबारा उपयोग करना या उसे पुनः जल चक्र में डालना जल संरक्षण का एक तरीका है।

हमारी पृथ्वी पूरे ब्रह्माण्ड के पिण्डों में सबसे सुन्दर है। इसकी सुन्दरता का कारण यहां पर जीवन और हरियाली का होना है। अंतरिक्ष यात्रियों ने जब पृथ्वी को वाह्य आकाश के निविड़ अंधकार में देखा तो उन्हें यह मूल्यवान नीले पत्थर के समान जान पड़ी। पृथ्वी की नीली आभा के पीछे यही कारण है कि इसका 70% भाग पानी से ढका हुआ है। वास्तव में पानी जीवन के लिये अमृत है। लेकिन पानी की इस विपुल राशि का 97.24% भाग तो समुद्री जल का खारापानी है। अतः उसे हम अपने दैनिक उपयोग में नहीं ला सकते और 2.14% हिम व हिमनद के रूप में है। शेष बचा मात्र 0.62% कितना थोड़ा सा जो कि झरनों, नदियों, तालाबों व भूमिगत जल के रूप में हमें उपलब्ध है जिसे हम प्रयोग कर सकते हैं और इसी थोड़े से पानी को यदि हम

दूषित व बर्बाद करेंगे तो हमारे पास क्या बचेगा। हम भावी पीढ़ी को क्या सौंपेंगे? और इसके बिना धरती पर क्या स्थिति बनेगी? ये बड़े ज्वलन्त और समसामयिक प्रश्न हैं, जैसे-जैसे विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे मानवीय आवश्यकतायें बढ़ रही हैं और अन्य बातों के अलावा पानी के उपयोग, बर्बादी और उसके प्रदूषित होने की गति में भी तेजी आ रही है। घरेलू उपयोग के अतिरिक्त कृषि और औद्योगिक कार्यों में भी पानी का

उपयोग खतरनाक ढंग से बढ़ रहा है यदि यह गति जारी रही तो वैज्ञानिकों की यह भविष्यवाणी निश्चित रूप से सत्य होगी कि अगला विश्व युद्ध पानी को लेकर लड़ा जायेगा। पानी को लेकर छोटे-छोटे विवाद तो हम आये दिन गांव के पनघट से लेकर खेतों, नदियों, नहरों प्रदेशों व देशों में देखते रहते हैं।

आज विश्व के कई क्षेत्रों में पानी का अभाव होता जा रहा है तथा पानी की गुणवत्ता सम्बन्धी समस्यायें बढ़ती जा रही हैं। सभी को स्वच्छ

पेयजल आसानी से उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। धरती पर पानी ठोस, द्रव व गैस तीन अवस्थाओं में पाया जाता है और यह तीनों अवस्थाओं में विभिन्न स्थानों के तापमान के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। पानी का स्वरूप एक चक्र के रूप में सदैव बदलता रहता है। लेकिन पृथ्वी पर पानी की कुल मात्रा सदैव समान रहती है। मानसून महीनों के दौरान भारी वर्षा धरती पर जोर से पड़ती है और इसी तेजी से पानी छनता हुआ भू के भीतर जाता है। यही भूमिगत जल का पुनर्भरण है। जल स्रोतों के पुनर्भरण का यह कार्य मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करता है। भूमिगत पानी धीमा और प्राचीन पानी है। इसमें



धरती पर पानी के तीन रूप-ठोस, द्रव व गैस



वर्षा जल को संग्रहित कर इसका घरेलू कार्यों में उपयोग

से कुछ तो लगभग 36,000 वर्ष पूर्व वर्षा का पानी है। प्रकृति ने बड़े प्रयासों से इसे एकत्र किया है। अतः इसे यूँ ही बर्बाद करना उचित नहीं।

पृथ्वी पर स्वच्छ जल का अंतिम स्रोत वर्षा या हिमपात है। लेकिन यह जगह-जगह अस्थिर है। आज हम मानसून के जल का मात्र दसवां भाग ही उपयोग कर पा रहे हैं। यदि हम पूरे जल को संग्रहित कर लें तो हम इसका पूरे वर्ष उपयोग कर सकते हैं। जल संरक्षण के बहुत सारे तरीके हो सकते हैं। वर्षा के पानी को घर की छतों से ही ग्रहण कर लेना, वर्षा जल को आस-पास के जल संग्रहण स्थानों जैसे गड्ढों तालाबों आदि में रोक लेना जल एकत्रीकरण की पारम्परिक पद्धतियाँ मूल्यांकन और सुधार, बर्बाद जल का उपयोग, बागवानी के लिये छोड़े गये खदान को जल एकत्रीकरण टैंक के रूप में वर्षा जल एकत्रीकरण के लिए फिल्टर और व्यवस्थित टंकी का निर्माण स्थानीय समुदाय द्वारा जल एकत्रीकरण प्रणाली विकसित करने से जल उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है जिससे जल आपूर्ति के लिये आर्थिक संसाधनों के लिये सरकारों पर कम दबाव पड़ेगा। जल का अपव्यय रूकेगा

जल संरक्षित होगा तथा इस महत्वपूर्ण कार्य में जनसहभागिता बढ़ेगी।

जैसे-जैसे मानव विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है जल की आवश्यकतायें व उपयोग भी बढ़ता जा रहा है। लोगों की खुशहाली और पर्यावरण के भरण पोषण के लिये पानी की बुनियादी जरूरतों को आगे बढ़कर देखें तो पानी के अभाव का सवाल बहुत हद तक

आर्थिक सवाल है। पानी का दोबारा उपयोग करना या उसे पुनः जल चक्र में डालना जल संरक्षण का एक तरीका है।

हमारे जीवन के महत्वपूर्ण अवयवों में आक्सीजन के बाद जल ही है। मनुष्य भोजन के बिना कुछ सप्ताहों तक जीवित रह सकता है। पर जल के बिना कुछ दिन तक भी बचना मुश्किल

है। पशु, पेड़-पौधे तथा मानव सभी की कोशिका क्रिया में पानी ही माध्यम का काम करती है। इससे पाचन क्रिया अवशोषण प्रवाह एवं उत्सर्जन क्रियाओं में मदद मिलती है। जल शरीर के इलेक्ट्रोलाइटिक संतुलन रखने में तथा शारीरिक तापक्रम सामान्य रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पानी की कमी पूरे स्वास्थ्य प्रणाली एवं हमारे अवयवों की क्रिया पर हानिकारक प्रभाव डालती है। पानी की कमी से स्वास्थ्य एवं साफ-सफाई दोनों अव्यवस्थित हो जाते हैं। प्रदूषित एवं जहरीला जल पीने से लोगों में ऐसी बीमारियों के पनपने का खतरा होता है जिन्हें रोकना मुश्किल है।

यूरोपीय देशों की तरह भारत को भी अब बड़े पैमाने पर अपशिष्ट पानी उपचारित करके मनोरंजन के लिये उपयोग करना होगा। नदी एवं समुद्र का उपयोग प्राचीन समय से ही माल परिवहन हेतु एवं जल क्रीड़ा के लिये किया जाता है।

संपर्क करें:

भगवती प्रसाद गौड़
प्रवक्ता (भौतिकी)
रा.इ.का. उज्ज्वलपुर (चमोली)
उत्तराखंड-246 444
मो.न. 9411598875
ईमेल: gaurbp.24@gmail.com



जल की शरीर के इलेक्ट्रोलाइटिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका